साहित्य विविधा

एक विमर्श

संपादक

डॉ. नानासाहेब जावळे, डॉ. मनोहर जमदाडे

9. संकटमोचन बने मित्र की कहानी 'अकबरी लोटा'
- डॉ. राजेंद्र खैरनार

10. पिता-पुत्र संघर्ष की मीमांसा 'प्रतिशोध'
- डॉ. राजेंद्र खैरनार

11. 'जूही की कली' कविता में प्रकृति का मानवीकरण
- डॉ. मनोहर जमदाडे

12. महाकरुणा से ओतप्रोत 'मैं नीर भरी दुख की बदली!'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

13. विरह व्यथा का सुंदर विवेचन 'कालिदास'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

14. भ्रष्ट राजनीति की पोल-खोल 'रोटी और संसद'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

15. धार : किसान जीवन का विदारक चित्रण
- डॉ. मनोहर जमदाडे

16. बाजारवादी संस्कृति पर कडा प्रहार 'आदमी को प्यास लगती है'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

17. आम आदमी के अंधकारमय जीवन पर प्रकाश 'रौशनी के उस पार'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

18. आदिवासी संस्कृति से लगाव 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा'
- डॉ. मनोहर जमदाडे

19. किताबों की उपेक्षा : 'किताबें झांकती हैं बंद अलमारी के शीशों से'
- डॉ. मनोहर जमदाडे

20. बहन के प्रति व्यक्त कृतज्ञता 'नींव की ईंट हो तुम दीदी'
– डॉ. नानासाहेब जावळे

21. संवाद कौशल (भाषण कला) – **प्रा. अच्युत शिंदे**

22. सूत्र संचालन - **प्रा. नामदेव शितोळे**

23. समूह चर्चा – **डॉ. शीतल माने**

24. युनिकोड की जानकारी – **डॉ. जयराम गाडेकर**

25. इंटरनेट एक अविष्कार - **डॉ. सारिका भगत**

26. हिंदी सॉफ्टवेयर की जानकारी - **डॉ. जयराम गाडेकर**

27. स्ववृत्त लेखन - **प्रा. रवींद्र ठाकरे**

28. निबंध-लेखन - **प्रा. अनिल झोळ**

29. विज्ञापन लेखन - **डॉ. प्रमोद पडवळ**

30. वाक्य शुद्धिकरण - **प्रा. नानासाहेब गोफणे**

23.

समूह चर्चा

- डॉ. शीतल माने

समूह चर्चा व्यक्तित्व विकसित करने का एक कौशल है। समूह चर्चा को आमतौर पर 'Group Discussion' इस अंग्रेजी शब्द का उपयोग करते हैं। इस शब्द का सार्थक अर्थ चर्चा एवं परिचर्चा करना अथवा परस्पर विचार विनिमय होता है। हिंदी में समूह का अर्थ है - समुदाय, झुंड या गिरोह। व्यक्ति से समूह, समूह से समाज, समाज से देश और देश से विश्व बनने की उत्तरोत्तर व्यापक संभावना मनुष्य के विकास और आत्मविकास की कहानी है। मनुष्य जीवन के आरंभिक काल में मनुष्य एकत्रित रूप से निवास करता था। उस समय सक्रिय साहचर्य, सोहबत तथा समान सर्वसाधारण कृत्य से आपस में बंधा हुआ ही था। आज मनुष्य का अकेले का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। मनुष्य - मनुष्य के बीच जो संवाद की स्थिति है, वह सामाजिक भूमिका के दायित्व वहन कर सकने की क्षमता का सुपरिणाम है। समूह चर्चा एक व्यवस्थित एवं सक्रिय शिक्षण विद्या है जो छात्रों के छोटे समूहों को मिलकर एक आम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। ये छोटे समूह नियोजित गतिविधियों के माध्यम से अधिक सक्रिय और अधिक प्रभावी सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देते हैं।

आज के सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकी युग में मनुष्य का व्यक्तित्व विकसित करने के लिए समूह चर्चा जैसे व्यक्तित्व कौशल की सख्त जरूरत जान पड़ती है। वर्तमान युग में व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होना महत्वपूर्ण है। भाषा के साथ - साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए स्वभाव गुण के साथ - साथ व्यक्तित्व कौशल को विकसित होना बहुत आवश्यक है। समूह चर्चा औपचारिक संप्रेषण है। यह औपचारिक जगह पर जैसे - पाठशाला, महाविद्यालय, प्रशासनिक कार्यालयों एवं उस हर जगह पर जहाँ समूह चर्चा करके निर्णय प्रक्रिया का अवलंब किया जाता है वहाँ समूह चर्चा निर्णय प्रक्रिया का महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है।

समूह चर्चा में एक चर्चा समूह समान रुचि वाले व्यक्तियों का एक समूह है जो विचारों को लाने, समस्याओं का हल करने या टिप्पणियाँ देने के लिए औपचारिक रूप या अनौपचारिक रूप से इकट्ठा होते हैं। प्रमुख दृष्टिकोण सम्मेलन कॉल या वेबसाइट के माध्यम से व्यक्ति में है। लोग स्थापित मेलिंग सूची, समाचार समूह या आईआरसी में टिप्पणियों और पोस्ट फोरम का जवाब देते हैं। अन्य समूह के सदस्य

पाठक या छवि पोस्ट करके जवाब दे सकते हैं। चर्चा समूह का उपयोग यूज़नोट से किया गया था। जो 80 के दशक के आरंभ में वापस आ गया था। दो कंप्यूटर वैज्ञानिक जिम एलिस और टॉम चूक को ने "लेख" का उत्पादन करके करने के लिए नियमों की एक प्रणाली स्थापित करने के विचारों की स्थापना की और फिर उनके समानांतर समाचारों के लिए वापस भेज दिया। चर्चा समूह का रूप यूज़नेट की अवधारणा पर उत्पन्न हुआ जिसमें ईमेल और वेब मंचों के माध्यम से संचार के तरीकों पर जोर दिया गया। धीरे - धीरे यूज़नेट ने चैनलों की एक प्रणाली विकसित की थी जो सामान्य जनता की जरूरतों को पूरा करने के लिए सूचनाएँ और लेख प्रदान करती थी। आजकल वर्ल्ड वाइड वेब धीरे धीरे विभिन्न सेट करके इंटरनेट पर चर्चा समूह के लिए प्लेटफार्मों का समर्थन और विस्तार करने में प्रमुख भूमिका निभाता है।

समूह चर्चा में हम किसी एक विषय पर सामूहिक चर्चा करते हैं और सभी अपने-अपने विचारों को रखते हैं। उस विषय के फायदे और नुकसान के बारे में बताते हैं। बहुमत के द्वारा उस विषय का परिणाम निकाला जाता है। इसके नियम इस तरह होते हैं -

1. एक समूह में सदस्यों की संख्या ज्यादा से ज्यादा 8 और कम से कम 5 होनी चाहिए।
2. समय सीमा 10 या 15 मिनट होनी चाहिए।
3. आपकी प्रस्तुति मनोरंजक, प्रभावी और विषय वस्तु पर केंद्रित होनी चाहिए।
4. चर्चा में वाक्य छोटे - छोटे हो।
5. चर्चा में ऐसी बात न हो जिसमें किसी धर्म, जाति, वर्ग की भावना को चोट पहुँचे।
6. भाषा सरल और सहज हो।
7. अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग आवश्यक है।

समूह चर्चा की बैठक व्यवस्था दो रूपों में होती हैं -

अ बैठक गृह व्यवस्था

1. सिनेमा गृह पद्धत
2. पाठशाला पद्धत
3. भोज पद्धत
4. T फॉर्मेशन पद्धत

ब सम्मेलन टेबल बैठक व्यवस्था

1. निर्देशित पद्धत
2. अनिर्देशित पद्धत

3. बराबरी / समकारी पद्धत
4. सहभागिता पद्धत

समूह चर्चा के उद्देश्य :

1. विषय का विस्तृत रूप से चर्चा करना एवं ज्ञान देना।
2. समस्या के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देते हुए हल निकालना।
3. स्वस्थ नैतिक अवधारणाओं की स्थापना एवं संवर्धन करना।
4. विद्यार्थियों में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना सदृढ करना।
5. तथ्यात्मक स्रोतों के आधार पर रुचि जागृत करना।
6. उपलब्धियों का दूसरों के विभिन्न विचारों द्वारा मूल्यांकन करना।
7. उच्च स्तरीय ज्ञानात्मक और भावनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करना।

समूह चर्चा के अनिवार्य घटक :

1. समूह चर्चा के सदस्य
2. समस्या
3. विषय सामग्री

1 समूह चर्चा के सदस्य : समूह चर्चा के सदस्य समूह चर्चा का एक महत्वपूर्ण अंग है। चर्चा को आयोजित तथा विषय वस्तु का चयन एवं गठन या सब कुछ समूह चर्चा के सदस्यों को स्वयं करना होता है। सभी सदस्य सावधानीपूर्वक निरीक्षण एवं कठिनाइयों का समाधान कर चर्चा के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2 समस्या : यह चर्चा का वह मूल विषय होता है। जिसका समाधान करने के लिए ही चर्चा का आयोजन किया जाता है। समस्या यथा संभव स्पष्ट व विद्यार्थियों की बोध क्षमता की सीमा में होनी चाहिए। समस्या का चयन अध्यापक को विद्यार्थियों के सहयोग से करना चाहिए।

3 विषय सामग्री : जॉनसन के अनुसार चर्चा की विषय सामग्री ज्ञान तथ्यों एवं सामान्यीकरणों का समूह है। यदि किसी समस्या पर विचार-विमर्श करके उसका समाधान ढूंढना है तो इसे प्राप्त करना चाहिए। विषय सामग्री के आधार पर ही समस्या का समाधान प्राप्त किया जा सकता है

समूह चर्चा के प्रकार :

1 औपचारिक चर्चा : औपचारिक चर्चा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम तथा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु आयोजित की जाती है। इस प्रकार की चर्चा के अपने निर्धारित नियम और उद्देश्य होते हैं। यह शिक्षक व छात्रों के मध्य आयोजित की जाती है।

2 अनौपचारिक चर्चा : इसमें निर्धारित नियम एवं सिद्धांतों का प्रयोग नहीं होता है। यह शिक्षक एवं छात्रों तथा छात्र-छात्र के मध्य हो सकती है।

3 बज वार्तालाप : ये छोटे व उद्देश्य पूर्ण चर्चा सत्र होते हैं जो एक छोटे समूह द्वारा किसी विशेष प्रश्न पर आयोजित किए जाते हैं।

4 सार्थक संरचनात्मक सामान्य चर्चा : यह उद्देश्य पूर्ण समूह चर्चा होती है जिसमें कक्षा के सभी विद्यार्थी भाग लेते हैं।

5. शिक्षण बिंदु पर सामूहिक चर्चा : इसमें कुछ विशिष्ट शिक्षण बिंदु पर सामूहिक चर्चा की जाती है

सामूहिक चर्चा के अंतर्गत छात्रों की स्वत: पठन-पाठन बढ़ावा देने हेतु समस्याओं पर ग्रुप वार्तालाप हेतु अवसर दिया जाता है। इससे छात्र स्वत: सीख एवं समस्याओं का निस्सारण का कार्य सुगमता से ग्रहण करते हैं। इसमें छात्रों का ग्रुप (गुट) समय-समय पर परिवर्तित किया जाता है। इसके माध्यम से औद्योगिक इकाइयों में गुट में कार्य करने और उसमें होनेवाली समस्याओं के निराकरण के साथ-साथ अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर पाते हैं। समूह चर्चा में शैक्षिक, तकनीक का महत्व मुख्यतः सामूहिक बौद्धिक कार्य पर आधारित है यह सामूहिक बौद्धिक कार्य यह मानकर चलता है कि एक व्यक्ति विशेष की तुलना में कई लोगों से प्राप्त जानकारियों, विचारों और भावनाओं का ग्रहण अधिक उपयोगी या लाभप्रद होता है। समूह के सभी सदस्य मिलकर विचारों का आदान - प्रदान करते हैं। यही चर्चा, परिचर्चा की सबसे बड़ी खूबी है। इस तकनीक के अनुसार शिक्षा क्षेत्र में सभी छात्र और अध्यापक मिल बैठकर किसी विषय विशेष पर खुलकर अपने विचार प्रकट करते हैं। यदि सामूहिक चर्चा, परिचर्चा न हो और केवल एक व्यक्ति या वर्ग चले और वही निष्कर्ष को प्रभावित करें तो फिर यह शिक्षा तकनीक विफल हो जाती है। इसकी वजह से चर्चा, परिचर्चा की श्रंखला बीच में ही टूट जाएगी अतः अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह सामान्यत: सभी क्षेत्रों को और विशेषत: अधिक जानकारी रखनेवाले छात्रों को चर्चा, परिचर्चा में भागीदारी निभाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आधार ग्रंथ :

1. नालंदा विशाल शब्द सागर श्री नवल जी आदेश बुक डिपो दिल्ली 7
2. बिजनेस कम्युनिकेशन आईसीएफएआई सेंटर फॉर मैनेजमेंट रिसर्च बंजारा हिल हैदराबाद

डॉ. शीतल मनोजकुमार माने
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
इंदापुर, जिला पुणे

●

डॉ. नानासाहेब जावळे

जन्म : सोनेवाडी, तहसील : कोपरगांव, जिला : अहमदनगर (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम. ए., एम. फिल., पीएच. डी., सेट

प्रकाशन : • भारतीय नाट्य परंपरा और डॉ. लाल तथा विजय तेंडुलकर के नाटक • आधुनिक हिंदी नाटक' (जिस लाहौर नहीं देख्या...,एक और द्रोणाचार्य, आठवां सर्ग) – सहा. लेखक • 'सिनेमा का सौंदर्यशास्त्र'– सहा. संपादक • विभिन्न पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में प्रकाशित शोधालेख

संप्रति : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सुभाष बाबुराव कुल महाविद्यालय, केडगांव, तहसील : दौंड, जिला : पुणे, (महाराष्ट्र) – 412203

मो० : 7588952444 **ईमेलः** jawalenanasaheb@gmail.com

डॉ. मनोहर जमदाडे

जन्म : जलोची, तहसील : बारामती, जिला : पुणे (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम. ए., एम. फिल., पीएच. डी., सेट

प्रकाशन : • 21 वीं सदी का महिला आत्मकथा साहित्य • दैनिक सकाळ में प्रकाशित कथा–i) पहाटेचा व्यायाम ii) फुकटचा सल्ला iii) सेल्फी • विभिन्न पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में प्रकाशित शोधालेख

संप्रति : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, साहेबराव शंकरराव ढमढेरे महाविद्यालय, तलेगांव ढमढेरे, तहसील : शिरूर, जिला : पुणे, (महाराष्ट्र) 412208

मो० : 9922070963, **ईमेलः** mjamdade@ymail.com

ABS

ए.बी.एस. पब्लिकेशन

वाराणसी - 221 007 (भारत)

मो० : (+91) 9450540654, 8669132434

E-mail : abspublication@gmail.com

ISBN 978-93-89908-30-5

9 789389 908305 >

₹ 395/-